नाम - डा. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय - राजनीति शास्त्र
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) भाग-01, पेपर-01
सत्र - 2019-20 दिनांक — 28.07.2020
टॉपिक - फेबीयनवाद के प्रमुख सिद्धांत —

(1.) पूंजीवाद का विरोध और समाजवाद में विश्वास - इसके अनुसार इनके द्वारा वर्तमान समय के पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था को सामाजिक हित के प्रतिकूल बताया गया तथा इसके स्थान पर समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना की बात कही गई ताकि साधारण जनता को निश्चित रूप से सामाजिक कल्याण का सुख प्राप्त हो सके।

(2.) क्रमिक विकास और संवैधानिक पद्धति के आधार पर समाजवाद की स्थापना - फेबीयनवादी मार्क्स और लेनिन के क्रांति मार्ग के विपरीत शांति पूर्ण, वैध और संवैधानिक साधनों द्वारा समाज में परिवर्तन और समाजवादी व्यवस्था लाना चाहते हैं। सिडनी वेब भी लोकतांत्रिक तरीका, क्रमिक रूप तथा वैध और शांतिपूर्ण उपायों का समर्थन करते हैं।

(3.) भूमि और पूंजी पर समाज का स्वामित्व मूल्य विषयक सिद्धांत — फेबीयनवादियों के विचार से भूमि और औद्योगिक पूंजी पर समाज का स्वामित्व होना चाहिये। वे मूल्य का आधार श्रम को नहीं मानते वरन् इसका कारण समाज बताते हैं। समाज ही वस्तुओं के मूल्य को उत्पन्न करता और बढ़ाता है। अतः इस मूल्य से उत्पन्न होनेवाला या बढ़ने वाला लाभ समाज को मिलना चाहिये। इसके लिये यह आवश्यक है कि भूमि और औद्योगिक उत्पादन के समस्त साधनों का राष्ट्रीयकरण कर उनपर समस्त समाज का स्वामित्व स्थापित कर दिया जाये।

(4.) राज्य के कार्यों में वृद्धि से समाजवाद की स्थापना - फेबीयनवाद लोकतंत्रीय राज्य को जनता का प्रतिनिधि तथा उनके हितों की पूरी देखभाल करने वाले ट्रस्टी समझते हैं। राज्य सामान्य

जनता का संरक्षक, उनकी ओर से व्यवसाय करने वाला, उनका प्रबंधक, उनका सचिव तथा पूँजी लगाने वाला है। राज्य के कार्यों में वृद्धि समाजवाद की स्थापना का सर्वप्रमुख साधन है।

(5) समाजवाद के प्रसार हेतु स्थानीय संस्थाओं के कार्यों में अधिकाधिक वृद्धि — राज्य के कार्यों में अधिकाधिक वृद्धि होने से केन्द्रीकरण के दुष्परिणाम उत्पन्न होने की आशंका है। अतः इस दोष को दूर करने के लिये फेबियनवादी स्थानीय संस्थाओं के कार्यों में अधिकाधिक वृद्धि का सुझाव देते हैं।

(6) लोकतंत्र और समाजवाद ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया के अनिवार्य और स्वाभाविक परिणाम — मार्क्सवादियों की भाँति फेबियन भी अपनी विचारधारा को आर्थिक और ऐतिहासिक आधार प्रदान करते हैं। इनके अनुसार इतिहास में निरंतर प्रगति हो रही है और यह प्रगति लोकतंत्र और समाजवाद की दिशा में है। सिडनी वेब ने इतिहास के उदाहरणों से स्पष्ट किया है कि इंग्लैंड में समय-समय पर संसद द्वारा पारित सुधार कानूनों से लोकतंत्र की स्थापना और औद्योगिक क्रांति के बाद व्यक्तिगत पूँजीपतियों के स्थान पर 'संयुक्त पूँजीवाली कंपनियाँ' इसका उदाहरण है। इस प्रकार

इस प्रकार ऐतिहासिक प्रक्रिया द्वारा समाजवाद का आगमन एक अनिवार्य और स्वाभाविक घटना है।